(1) राजन की कहानी

तीन वर्ष पहले पवन कुमार निवासी बी-52 शस्त्री नगर ज्वालापु , जनपद हरिद्वार स्थित घर में अपने बच्चों के साथ हंसी खुशी अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। तभी दिनांक 27 मई 2012 को उनका बेटा राजन उम्र-9 वर्ष खेलते समय घर के पास से लापता हो गया था। यह बच्चा कुछ समय बाद पुलिस को खटीमा में भटकता हुआ मिला। पूछताछ में पुलिस को बच्चे के परिजनों के बारे में कोई जानकारी नही मिली। प्रशासन ने इसे पालन-पोषण के लिए रूद्रपुर स्थित स्वाधार केन्द्र भेज दिया। एस0डी0एम0 खटीमा के आदेश पर बच्चे को 12 दिसम्बर 2012 को अल्मोड़ा के राजकीय शिशु सदन दाखिल किया गया। तब से इस बच्चे की शिशु सदन में ही परवरिश हो रही थी। बच्चे के बारे में कोई जानकारी नही होने से शिशु सदन प्रशासन भी बच्चे के परिजनों से संपर्क नहीं कर सका।

उत्तराखण्ड पुलिस द्वारा चलाये जा रहे ऑपरेशन स्माईल के तहत अल्मोड़ा पुलिस के टीम प्रभारी गोविन्द बल्लभ भट्ट ने हरिद्वार पुलिस से मिले विवरण के आधार पर अल्मोड़ा बस्त स्थित शिशु सदन जाकर वहां रह रहे बच्चों के बारे में जानकारी ली। शिशु सदन में एक बच्चे का नाम बादल दर्ज होने पर पुलिस ने हरिद्वार से मिली जानकारी के आधार पर हरिद्वार से लापता हुए बच्चे के परिजनों से संपर्क किया तो परिजनों ने उनके बच्चे के दाहिने हाथ में बी बावन शस्त्री नगर गुदा होने की जानकारी दी। पुलिस ने मौके पर जाकर राजन के हाथ में दर्ज यह शब्द देखे। राजन के दाएं हाथ में हरे रंग की स्याही से बी बावन शास्त्री नगर गुदा था। इसकी स्याही हल्की पड़ जाने से शिशु सदन वालों ने इसे बी बादल समझ लिया और शिशु सदन के अभिलेखों में उसका नाम बादल दर्ज कर लिया। कड़ियां जुड़ते ही बादल की पहचान राजन के रूप में हुई। जिसको उसके परिजनों के सुपुर्द किया गया।